इकाई-III

10. जब सिनेमा ने बोलना सीखा

–प्रदीप तिवारी

प्रस्तावना प्रसंग–

प्रश्न

1. सिनेमा का संबंध हमारे भूत, भविष्य एवं वर्तमान से है, कैसे?
2. जब सिनेमा नहीं था तो लोग अपना मनोरंजन किस प्रकार करते होंगे?
3. अपने आरंभिक दिनों में सिनेमा कैसे होते होंगे? उन्हें देखकर उस समय के लोग क्या सोचते होंगे?

SCERT TELANGANA

'वे सभी सजीव हैं, साँस ले रहे हैं, शत-प्रतिशत बोल रहे हैं, अठहत्तर मुर्दा इनसान जिंदा हो गए, उनको बोलते, बातें करते देखो।' देश की पहली सवाक् (बोलती) फिल्म 'आलम आरा' के पोस्टरों पर विज्ञापन की ये पंक्तियाँ लिखी हुई थीं। 14 मार्च 1931 की वह ऐतिहासिक तारीख भारतीय सिनेमा में बड़े बदलाव का दिन था। इसी दिन पहली बार भारत के सिनेमा ने बोलना सीखा था। हालाँकि वह दौर ऐसा था जब मूक सिनेमा लोकप्रियता के शिखर पर था। पहली बोलती फिल्म जिस साल प्रदर्शित हुई, उसी साल कई मूक फिल्में भी विभिन्न भाषाओं में बनीं। मगर बोलती फिल्मों का नया दौर शुरू हो गया था।

पहली बोलती फिल्म आलम आरा बनानेवाले फिल्मकार थे अर्देशिर एम. ईरानी। अर्देशिर ने 1929 में हॉलीवुड की एक बोलती फिल्म 'शो बोट' देखी और उनके मन में बोलती फिल्म बनाने की इच्छा जगी। पारसी रंगमंच के एक लोकप्रिय नाटक को आधार बनाकर उन्होंने अपनी फिल्म की पटकथा बनाई। इस नाटक के कई गाने ज्यों के त्यों फिल्म में ले लिए गए। एक इंटरव्यू में अर्देशिर ने उस वक्त कहा था- 'हमारे पास कोई संवाद लेखक नहीं था, गीतकार नहीं था, संगीतकार नहीं था।' इन सबकी शुरुआत होनी थी। अर्देशिर ने फिल्म के गानों के लिए स्वयं की धुनें चुनीं। फिल्म के संगीत में महज तीन वाद्य-तबला, हारमोनियम और वायलिन का इस्तेमाल किया गया। आलम आरा में संगीतकार या गीतकार में स्वतंत्र रूप से किसी का नाम नहीं डाला गया। इस फिल्म में पहले पार्श्वगायक बने डब्लू. एम. खान। पहला गाना था-'दे दे खुदा के नाम पर प्यारे, अगर देने की ताकत है।'

आलम आरा का संगीत उस समय डिस्क फॉर्म में रिकार्ड नहीं किया जा सका, फिल्म की शूटिंग शुरू हुई तो साउंड के कारण ही इसकी शूटिंग रात में करनी पड़ती थी। मूक युग की अधिकतर फिल्मों को दिन के प्रकाश में शूट कर लिया जाता था, मगर आलम आरा की शूटिंग रात में होने के कारण इसमें कृत्रिम प्रकाश व्यवस्था करनी पड़ी। यहीं से प्रकाश प्रणाली बनी जो आगे फिल्म निर्माण का जरूरी हिस्सा बनी।

'आलम आरा' ने भविष्य के कई स्टार और तकनीशियन तो दिए ही, अर्देशिर की कंपनी तक ने भारतीय सिनेमा के लिए डेढ़ सौ से अधिक मूक और लगभग सौ सवाक् फिल्में बनाई।

आलम आरा फिल्म 'अरेबियन नाइट्स' जैसी फैंटसी थी। फिल्म ने हिंदी-उर्दू के मेलवाली 'हिंदुस्तानी' भाषा को लोकप्रिय बनाया। इसमें गीत, संगीत तथा नृत्य के अनोखे संयोजन थे। फिल्म की नायिका जुबैदा थीं। नायक थे विट्ठल। वे उस दौर के सर्वाधिक पारिश्रमिक पानेवाले स्टार थे। उनके चयन को लेकर भी एक किस्सा काफी चर्चित है। विट्ठल को उर्दू बोलने में मुश्किलें आती थीं। पहले उनका बतौर नायक चयन किया गया मगर इसी कमी के कारण उन्हें हटाकर उनकी जगह महबूब को नायक बना दिया गया। विट्ठल नाराज हो गए और अपना हक पाने के लिए उन्होंने मुकदमा कर दिया।

SCERT TELANGANA

उस दौर में उनका मुकदमा मोहम्मद अली जिन्ना ने लड़ा जो तब के मशहूर वकील हुआ करते थे। विट्ठल मुकदमा जीते और भारत की पहली बोलती फिल्म के नायक बने। उनकी कामयाबी आगे भी जारी रही। मराठी और हिंदी फिल्मों में वे लंबे समय तक नायक और स्टंटमैन के रूप में सक्रिय रहे। इसके अलावा 'आलम आरा' में सोहराब मोदी, पृथ्वीराज कपूर, याकूब और जगदीश सेठी जैसे अभिनेता भी मौजूद रहे आगे चलकर जो फिल्मोद्योग के प्रमुख स्तंभ बने।

यह फिल्म 14 मार्च 1931 को मुंबई के मैजेस्टिक सिनेमा में प्रदर्शित हुई। फिल्म 8 सप्ताह तक 'हाउसफुल' चली और भीड़ इतनी उमड़ती थी कि पुलिस के लिए नियंत्रण करना मुश्किल हो जाया करता था। समीक्षकों ने इसे 'भड़कीली फैंटेसी' फिल्म करार दिया था मगर दर्शकों के लिए यह फिल्म एक अनोखा अनुभव थी। यह फिल्म 10 हज़ार फुट लंबी थी और इसे चार महीनों की कड़ी मेहनत से तैयार किया गया था।

सवाक् फिल्मों के लिए पौराणिक कथाओं, पारसी रंगमंच के नाटकों, अरबी प्रेम-कथाओं को विषय के रूप में चुना गया। इनके अलावा कई सामाजिक विषयों वाली फिल्में भी बनीं। ऐसी ही एक फिल्म थी-'खुदा की शान।' इसमें एक किरदार महात्मा गांधी जैसा था। इसके कारण सवाक् सिनेमा को ब्रिटिश प्रशासकों की तीखी नज़र का सामना करना पड़ा।

सवाक् सिनेमा के नए दौर की शुरुआत करानेवाले निर्माता-निर्देशक अर्देशिर इतने विनम्र थे कि जब 1956 में 'आलम आरा' के प्रदर्शन के पच्चीस वर्ष पूरे होने पर उन्हें सम्मानित किया गया और उन्हें 'भारतीय सवाक् फिल्मों का पिता' कहा गया तो उन्होंने उस मौके पर कहा था, "मुझे इतना बड़ा खिताब देने की जरूरत नहीं है। मैंने तो देश के लिए अपने हिस्से का जरूरी योगदान दिया है।"

जब पहली बार सिनेमा ने बोलना सीख लिया, सिनेमा में काम करने के लिए पढ़े-लिखे अभिनेता-अभिनेत्रियों की जरूरत भी शुरू हुई क्योंकि अब संवाद भी बोलने थे, सिर्फ अभिनय से काम नहीं चलनेवाला था। मूक फिल्मों के दौर में तो पहलवान जैसे शरीरवाले, स्टंट करनेवाले और उछल-कूद करनेवाले अभिनेताओं से काम चल जाया करता था। अब उन्हें संवाद बोलना था और गायन की प्रतिभा की कद्र भी होने लगी थी। इसलिए 'आलम आरा' के बाद आरंभिक 'सवाक्' दौर की फिल्मों में कई 'गायक-अभिनेता' बड़े पर्दे पर नज़र आने लगे। हिंदी-उर्दू भाषाओं का महत्व बढ़ा। सिनेमा में देह और तकनीक की भाषा की जगह जन प्रचलित बोलचाल की भाषाओं का दाखिला हुआ। सिनेमा ज़्यादा देसी हुआ। एक तरह की नयी आज़ादी थी जिससे आगे चलकर हमारे दैनिक और सार्वजनिक जीवन का प्रतिबिंब फिल्मों में बेहतर होकर उभरने लगा।

अभिनेताओं-अभिनेत्रियों की लोकप्रियता का असर उस दौर के दर्शकों पर भी खूब पड़ रहा था। 'माधुरी' नाम की फिल्म में नायिका सुलोचना की हेयर स्टाइल उस दौर में औरतों में लोकप्रिय थी। औरतें अपने केशसज्जा उसी तरह कर रही थीं। अर्देशिर ईरानी की फिल्मों में भारतीय के अलावा ईरानी कलाकारों ने भी अभिनय किया था। स्वयं 'आलम आरा' भारत के अलावा श्रीलंका, बर्मा और पश्चिम एशिया में पसंद की गई।

SCERT TELANGANA

भारतीय सिनेमा के जनक फाल्के को 'सवाक्' सिनेमा के जनक अर्देशिर ईरानी की उपलब्धि को अपनाना ही था, क्योंकि वहाँ से सिनेमा का एक नया युग शुरू हो गया था।

–प्रदीप तिवारी

प्रश्न–अभ्यास

सुनिए-बोलिए

1. अगर आप किसी मूक फिल्म के दर्शक होते तो आपके मन में क्या–क्या विचार उत्पन्न होते? चर्चा कीजिए।
2. फिल्में समाज का दर्पण हैं। इनमें समाज के भूत, भविष्य एवं वर्तमान के दर्शन होते हैं। एक दौर था जब फिल्मों में नैतिक मूल्यों एवं सामाजिक समस्याओं का चित्रण होता था। उनमें मनोरंजन के लिए प्रयुक्त संगीत, साहित्य, अभिनय आदि कलाएँ श्रेष्ठ कोटि की होती थीं। "आजकल की फिल्मों में कलाओं की श्रेष्ठता कहीं खो गई है।" इसके पक्ष–विपक्ष में चर्चा कीजिए।

पढ़िए

1. पहला बोलता सिनेमा बनाने के लिए फिल्मकार अर्देशिर एम. ईरानी को प्रेरणा कहाँ से मिली? उन्होंने आलम आरा फिल्म के लिए आधार कहाँ से लिया?
2. जब पहली बोलती फिल्म प्रदर्शित हुई तो उसके पोस्टरों पर कौन से वाक्य छापे गये? उस फिल्म में कितने चेहरे थे?
3. डब फिल्में किसे कहते हैं? कभी–कभी डब फिल्मों में अभिनेता के मुँह खोलने और आवाज़ में अंतर आ जाता है। इसका कारण क्या हो सकता है?
4. जब पहली सवाक् फिल्म के निर्माता–निर्देशक अर्देशिर को सम्मानित किया गया तब
   - सम्मानकर्ताओं ने उनके लिए क्या कहा था?
   - अर्देशिर ने क्या कहा?
   - इस प्रसंग में लेखक ने क्या टिप्पणी की?

लिखिए

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार–पाँच वाक्यों में लिखिए।

1. सिनेमा में पढ़े–लिखे अभिनेता–अभिनेत्रियों की आवश्यकता क्यों पड़ी होगी?

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

2. किसी मूक सिनेमा में बिना आवाज़ के ठहाकेदार हँसी कैसी दिखेगी? अभिनय करके अनुभव कीजिए। इस पर अपने विचार लिखिए।
3. अँग्रेज़ी सिनेमा में गाने नहीं के बराबर होते हैं। यदि हिंदी सिनेमा में भी गाने न हों तो कैसा लगेगा? अपने विचार लिखिए।
4. फिल्में भाषा के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, कैसे? लिखिए।

II. निम्नलिखित प्रश्न का उत्तर आठ-दस वाक्यों में लिखिए।

1. मूक सिनेमा में संवाददाता नहीं होते, उसमें दैहिक अभिनय की प्रधानता होती है। पर जब सिनेमा बोलने लगा, उसमें परिवर्तन हुए। वे परिवर्तन इनके संबंध में क्या हो सकते हैं?
   - अभिनेता
   - दर्शक
   - तकनीक
2. फिल्में केवल मनोरंजन का साधन मात्र ही नहीं, वे हमसे बहुत कुछ कहना चाहती हैं। इनमें हमारे जीवन, साहित्य, संस्कृति, सभ्यता आदि की झलक दिखाई देती है। फिल्में सामाजिक परिवर्तन में आजकल महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। फिल्मों का समाज एवं संस्कृति पर प्रभाव के बारे में अपने विचार लिखिए।

शब्द भंडार

1. पाठ में आयी अँग्रेज़ी शब्दावली जैसे- पोस्टरों, इंटरव्यू को हिन्दी ने बड़े प्रेम से स्वीकारा है। पाठ में आये ऐसे ही अन्य शब्दों को छाँटकर, उनके हिन्दी के समानार्थी शब्द जानिए और लिखिए।
2. रेखांकित शब्द का अर्थ जानें और वाक्य प्रयोग करें।
   क. फिल्म खुदा की शान में एक **किरदार** महात्मा गाँधी जैसा था।
   ख. निर्देशक अर्देशिर को भारतीय सवाक् फिल्मों के पिता का **खिताब** दिया गया।

भाषा की बात

1. 'सवाक्' शब्द 'वाक्' के पहले 'स' लगाने से बना है। 'स' उपसर्ग से कई शब्द बनते हैं। निम्नलिखित शब्दों के साथ 'स' का उपसर्ग के भाँति प्रयोग करके शब्द बनायें और शब्दार्थ में होनेवाले परिवर्तन को बताएँ। हित, परिवार, विनय, चित्र, बल, सम्मान।
2. उपसर्ग और प्रत्यय दोनों ही शब्दांश होते हैं। वाक्य में इनका अकेला प्रयोग नहीं होता। इन दोनों में अंतर केवल इतना होता है कि उपसर्ग किसी भी शब्द में पहले लगता है और प्रत्यय बाद में।

SCERT TELANGANA

हिंदी के सामान्य उपसर्ग इस प्रकार हैं- अ/अन, नि, दु, क/कु, स/सु, अध, बिन, औ आदि।

पाठ में आये उपसर्ग और प्रत्ययुक्त शब्दों के कुछ उदाहरण नीचे दिये जा रहे हैं-

मूल शब्द	उपसर्ग	प्रत्यय	शब्द
वाक्	स	-	सवाक्
लोचन	सु	आ	सुलोचना
फिल्म	-	कार	फिल्मकार
कामयाब	-	ई	कामयाबी

इस प्रकार के पंद्रह-पंद्रह उदाहरण खोजकर लिखिए और अपने सहपाठियों को दिखाइए।

प्रशंसा

आपने पढ़ा कि पहले फिल्में मूक होती थीं। इस आधार पर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि एक समय ऐसा भी रहा होगा जब इन्सान भी केवल मूक भाषा का प्रयोग करता रहा हो। अनुमान लगाइए कि यदि सवाक् भाषा नहीं होती तो हमें किस प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता?

सृजनात्मक अभिव्यक्ति

किसी एक कहानी को रंगमंच पर प्रस्तुत करने हेतु संवाद रूप में परिवर्तित कीजिए।

परियोजना कार्य

मूक फिल्म देखने का एक उपाय यह है कि आप टेलीविज़न की आवाज़ बंद करके फिल्म देखें। आप भी इस प्रकार टी.वी. में एक धारावाहिक देखिए। किसी एक अंक का कथा सार लिखने का प्रयास कीजिए।

क्या मैं ये कर सकता/सकती हूँ?	हाँ (✓)	नहीं (×)
1. पाठ के भाव के बारे में बातचीत कर सकता/सकती हूँ। 2. पाठ के विषय में मौखिक व लिखित अभिव्यक्ति कर सकता/सकती हूँ। 3. पाठ के शब्दों का प्रयोग अपनी भाषा में कर सकता/सकती हूँ। 4. सिनेमा के विकास के बारे में बता सकता/सकती हूँ। 5. सामान्य विषयों के बारे में संवाद लिख सकता/सकती हूँ।		

SCERT TELANGANA

तेलंगाणा सरकार द्वारा निशुल्क वितरण 2020-21

दो कलाकार

उपवाचक

- मन्नू भंडारी

''ए रूनी, उठ।'' और चादर खींचकर चित्रा ने सोती होती हुई अरुणा को झकझोर कर उठा दिया। ''अरे, क्या है?'' आँखें मलते हुए तनिक खिझलाहट भरे स्वर में अरुणा ने पूछा। चित्रा उसका हाथ पकड़कर खींचती हुई ले गयी और अपने नये बनाये हुए चित्र के सामने ले जाकर खड़े कर के बोली, ''देख, मेरा चित्र पूरा हो गया।''

ओह, तो इसे दिखाने के लिए तूने मेरी नींद खराब कर दी।

''अरे, ज़रा इस चित्र को तो देख। न पा गयी पहला इनाम तो नाम बदल देना।''

चित्र को देखकर चारों ओर घुमाते हुए अरुणा बोली, ''किधर से देखूँ, यह तो बता दे? हज़ार बार तुझसे कहा कि जिसका चित्र बनाये, उसका नाम लिख दिया कर, जिससे गलतफहमी न हुआ करे, वरना तू बनाये हाथ ही और समझें उल्लू।'' तस्वीर पर आँखें गड़ाते हुई बोली, ''किसी तरह नहीं समझ पा रही हूँ आखिर यह किस जीव की तस्वीर है।''

''तो आपको यह कोई जीव नज़र आ रहा है? ज़रा अच्छी तरह देख और समझने की कोशिश कर।''

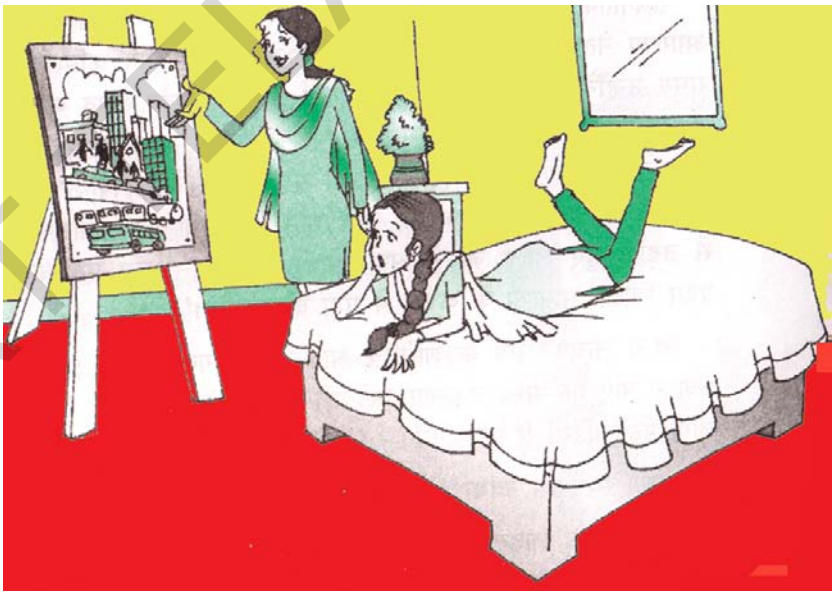

''अरे, यह क्या? इसमें तो सड़क, आदमी, ट्रैम, बस, मोटर, मकान सब एक-दूसरे पर चढ़ रहे हैं। मानो सबकी खिचड़ी पकाकर रख दी हो। क्या घनचक्कर बनाया है?'' यह कहकर अरुणा ने चित्र रख दिया।

''ज़रा सोचकर बता कि यह किसका प्रतीक है।''

''तेरी बेवक़ूफी का। आयी है, बड़ी प्रतीक वाली।''

''अरे जनाब, यह चित्र तो आज की दुनिया में 'कन्फ्यूजन' का प्रतीक है, समझी।''

''मुझे तो तेरी दिमाग की कन्फ्यूजन का प्रतीक आ रहा है, बिना मतलब जिंदगी खराब कर रही है।'' और अरुणा मुँह धोने के लिए बाहर चली गयी। लौटी तो देखा तीन-चार बच्चे उसके कमरे के दरवाजे पर खड़े उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। आते ही बोली, '' बच्चो! चलो, मैं अभी आयी।''

SCERT TELANGANA

''क्या यह बंदर पाल रखी है?'' फिर ज़रा हँसकर चित्रा बोली, ''एक दिन तेरी पाठशाला का चित्र बनाना होगा। लोगों को दिखाया करेंगे कि हमारी एक मित्र साहिबा थीं जो बस्ती के चौकीदारों, नौकरों, चपरासियों के बच्चों को पढ़ा-पढ़ाकर ही अपने को भारी पंडिताइन और समाज-सेविका समझती थीं।''

चार बजते ही कॉलेज से सारी लड़कियाँ लौट आयीं, पर अरुणा नहीं लौटी। चित्रा चाय के लिए उसकी प्रतीक्षा कर रही थी।

''पता नहीं, कहाँ-कहाँ भटक जाती है, बस इसके पीछे बैठे रहो।''

''अरे, क्यों बड़-बड़ कर रही है? ले, मैं आ गयी। चल, बना चाय। मिलकर ही पियेंगे।''

''ये ले कोई चिट्ठी आयी है।''

अरुणा लिफाफा फाड़कर पत्र पढ़ने लगी। जब उसका पत्र समाप्त हो गया तो चाय पीते-पीते चित्रा बोली, ''पिताजी का पत्र आया है, लिखा है, जैसे ही यहाँ कोर्स समाप्त हो जाये, मैं विदेश जा सकती हूँ। मैं तो जानती थी कि, पिताजी कभी मना नहीं करेंगे।''

''हाँ भाई। धनी पिता की इकलौती बिटिया ठहरी। तेरी इच्छा कभी खाली जा सकती है? पर सच कहती हूँ मुझे तो सारी कला इतनी निरर्थक लगती है, इतनी बेमतलब लगती है कि बता नहीं सकती। किस काम की ऐसी कला, जो आदमी को आदमी न रहने दे।'' अरुणा आवेश से बोली।

''तो तुम मुझे आदमी नहीं समझती, क्यों?''

''तुझे दुनिया से कोई मतलब नहीं, दूसरों से कोई मतलब नहीं। बस चौबीस घंटे अपने रंगों और तूलियों में डूबी रहती है। दुनिया में कितनी बड़ी घटना घट जाये पर यदि उसमें तेरे चित्र के लिए आइडिया नहीं तो तेरे लिए वह घटना कोई महत्व नहीं रखती। हर घड़ी, हर जगह, हर चीज़ में तू अपने चित्रों के लिए मॉडल खोजा करती है। कागज़ पर इन निर्जीव चित्रों को बनाने की जगह दो-चार की जिंदगी क्यों नहीं बना देती। तेरे पास सामर्थ्य है, साधन है।''

''वह काम तो तेरे लिए छोड़ दिया। मैं चली जाऊँगी तो जल्दी से सारी दुनिया का कल्याण करने के लिए झंडा लेकर निकल पड़ना।'' और चित्रा हँस पड़ी।

तीन दिनों से मूसलदार वर्षा हो रही थी। रोज़ अखबारों में बाढ़ की खबरें आती थीं। बाढ़ पीढ़ितों की दशा बिगड़ती जा रही थी और वर्षा थी कि थमने का नाम नहीं लेती थी। अरुणा सारा दिन चंदा इकट्ठा करने में व्यस्त रहती। एक दिन आखिर चित्रा ने कह दिया, तेरे इंतहान सिर पर आ रहे हैं, कुछ पढ़ती-लिखती है नहीं, सारा दिन बस भटकती रहती है। माता-पिता क्या सोचेंगे कि इतना पैसा बेकार ही पानी में बहाया।''

''आज शाम को स्वयंसेवकों का एक दल जा रहा है, प्रिंसिपल से अनुमति ले ली है, मैं भी उसके साथ जा रही हूँ।'' चित्रा की बात को बिना सुने उसने कहा।

शाम को अरुणा चली गयी। पंद्रह दिन बाद वह लौटी तो उसकी हालत काफी ख़राब हो रही थी। सूरत ऐसी निकल आयी कि मानो छह महीनों से बीमार है। चित्रा उस समय ''गुरुदेव'' के पास गयी हुई थी। अरुणा नहा-धोकर, खा-पीकर लेटने लगी। तभी उसकी नज़र चित्रा के नये चित्रों की ओर गयी। तीन चित्र बने रखे थे। तीनों बाढ़ के चित्र थे जो दृश्य अपनी आँखों से देखकर आ रही थी वैसे ही दृश्य यहाँ पर अंकित थे। उसका मन न जाने कैसा-कैसा हो गया।

SCERT TELANGANA

शाम को चित्रा लौटी तो अरुणा को देखकर बड़ी प्रसन्न हुई। ''क्यों चित्रा, तेरा जाने का तय हो गया?''

''हाँ, अगले बुध को मैं घर जाऊँगी और एक सप्ताह बाद हिंदुस्तान की सीमा के बाहर पहुँच जाऊँगी।'' उल्लास उसके स्वर में से छलका पड़ रहा था।

''सच कह रही है, तू चली जाएगी चित्रा, छह साल से साथ रहते-रहते यह बात मैं तो भूल गयी कि कभी हमको अलग भी होना पड़ेगा। तू चली जाएगी तो मैं कैसे रहूँगी?'' उदासी भरे स्वर में अरुणा ने पूछा। लगा जैसे स्वयंसेवी पूछ रही हो।

कितना स्नेह था दोनों में ''सारा हॉस्टल उनकी मित्रता को ईर्ष्या की दृष्टि से देखता था।

आज चित्रा को जाना था। अरुणा सवेरे से ही उसका सारा सामान ठीक कर रही थी। एक-एक करके चित्रा सबसे मिल आयी। बस गुरुजी से मिलना रह गया था। सो उनका आशीर्वाद लेने चल पड़ी। तीन बज गये थे, पर वह लौटी नहीं। पाँच बजे की गाड़ी से वह जाने वाली थी। अरुणा ने सोचा कि वह खुद जाकर देख आये कि आखिर बात क्या हो गयी। तभी हड़बड़ाती सी चित्रा ने प्रवेश किया। ''बड़ी देर हो गयी न। अरे क्या करूँ कि बस कुछ ऐसा हो गया, कि रुकना ही पड़ा।''

''आखिर क्या हो गया ऐसा, जो रुकना ही पड़ा, सुनो तो।'' दो-तीन कंठ एक साथ बोले, ''गर्ग स्टोर के सामने पेड़ के नीचे अक्सर भिखारिन रहा करती थीं न, लौटी तो देखा कि वह वही मरी पड़ी और उसके दोनों बच्चे उसके सूखे शरीर से चिपककर बुरी तरह रो रहे थे। जाने क्या था पूरे दृश्य में कि मैं अपने को रोक नहीं सकी। एक रफ सा स्केच बना ही डाला। बस इसी में देर हो गयी।''

साढ़े चार बजे चित्रा हॉस्टल के फाटक पर आ गयी, पर तब तक अरुणा का कहीं पता नहीं था। बहुत सारी लड़कियाँ उसे छोड़ने स्टेशन तक भी गयीं, पर चित्रा की आँखें बराबर अरुणा को ढूँढ़ रही थी। पाँच भी बज गये, रेल चल पड़ी पर अरुणा न आयी, सो न आयी।

विदेश जाकर चित्रा तन-मन से अपने काम में जुट गयी। उसकी लगन ने उसकी कला को निखार दिया। विदेश में उसके चित्रों की धूम मच गयी। भिखारिन और दो अनाथ बच्चों के उस चित्र की प्रशंसा में तो अखबार के कालम के कालम भर गये। शोहरत के ऊँचे कगार पर बैठ, चित्रा जैसे अपना पिछला सब कुछ भूल गयी। पहले वर्ष तो अरुणा से पत्र व्यवहार बड़े नियमित रूप से चला। फिर कम होते-होते एकदम बंद हो गया। पिछले एक साल से उसे यह भी मालूम नहीं कि वह कहाँ है। अनेक प्रतियोगिताओं में उसका 'अनाथ' शीर्षक वाला चित्र प्रथम पुरस्कार पा चुका था। जाने क्या था उस चित्र में, जो देखता चकित रह जाता। तीन साल बाद जब वह भारत लौटी तो बड़ा स्वागत हुआ उसका। अखबारों में उसकी कला पर, उसके जीवन पर अनेक लेख छपे। पिता अपनी इकलौती बिटिया की इस सफलता पर बहुत प्रसन्न थे। दिल्ली में उसके चित्रों की प्रदर्शनी का विराट आयोजन किया गया। उद्घाटन करने के लिए उसे ही बुलाया गया।

उस भीड़-भाड़ में अचानक उसकी भेंट अरुणा से हो गयी। 'रूनी' कहकर चित्रा भीड़ की उपस्थिति को भूलकर अरुणा के गले से लिपट गयी।

''तुझे कब से चित्र देखने का शौक हो गया, रूनी?''

''चित्रों को नहीं, चित्रा को देखने आयी थी। तू तो एकदम भूल ही गयी।''

''अरे, ये बच्चे किसके हैं?'' दो प्यारे से बच्चे अरुणा से सटे खड़े थे। लड़के की उम्र दस साल

SCERT TELANGANA

की होगी। तो लड़की की उम्र कोई आठ।

''मेरे बच्चे हैं, और किसके। यह तुम्हारी चित्रा मौसी हैं, नमस्ते करो, अपनी मौसी को।'' अरुणा ने आदेश दिया।

बच्चों ने बड़े आदर से नमस्ते किया। पर चित्रा अवाक् होकर कभी बच्चों को कभी अरुणा का मुँह देख रही थी। तभी अरुणा ने टोका।'' कैसी मौसी है, प्यार तो कर।'' और चित्रा ने दोनों पर हाथ फेरा प्यार से। अरुणा ने कहा, ''तुम्हारी यह मौसी बहुत अच्छी तस्वीरें बनाती हैं, ये सारी तस्वीरें इन्हीं की बनायी हुई है।''

''आप हमें सब तस्वीरें दिखाइए मौसी,''बच्चों ने फरमाइश की। चित्रा उन्हें तस्वीरें दिखाने लगी। घूमते-घूमते वे उसी भिखारिन वाली तस्वीर के सामने आ पहुँचे। चित्रा ने कहा, ''यही वह तस्वीर है रूनी,जिसने मुझे इतनी प्रसिद्धी दी।''

''ये बच्चे रो क्यों रहे हैं मौसी'' तस्वीर को ध्यान से देखकर बालिका ने पूछा।

''उनकी माँ मर गयी है। देखती नहीं, मरी पड़ी है। इतना भी नहीं समझती।'' बालक ने मौका पाते ही अपने बड़प्पन और ज्ञान की छाप लगायी।

''ये सचमुच के बच्चे थे, मौसी?'' बालिका का स्वर करुण से करुणतर होता जा रहा था।

''अरे, सचमुच के बच्चों को देखकर ही तो बनायी थी यह तस्वीर।''

''मौसी, हमें ऐसी तस्वीर नहीं, अच्छी-अच्छी तस्वीरें दिखाओ, राजा-रानी की, परियों की।''

उन तस्वीरों को और अधिक देर तक देखना बच्चों के लिए असह्य हो उठा था। तभी अरुणा के पति आ पहुँचे। साधारण बातचीत के पश्चात अरुणा ने दोनों बच्चों को उनके हवाले करते हुए कहा, ''आप ज़रा बच्चों को प्रदर्शिनी दिखाइए, मैं चित्रा को लेकर घर चलती हूँ।''

बच्चे इच्छा न रहते हुए भी पिता के साथ विदा हुए। चित्रा को दोनों बच्चे बड़े ही प्यारे लगे। वह उन्हें देखती रही। जैसे ही वे आँखों से ओझल हुए उसने पूछा, ''सच-सच बता रूनी, ये प्यारे-प्यारे बच्चे किनके हैं?''

''कहा तो, मेरे।'' अरुणा ने हँसते हुए कहा।

''अरे बता न, मुझे ही बेवकूफ बनाने चली है।'' एक क्षण रुककर अरुणा ने कहा, ''बता दूँ?'' और फिर उस भिखारिन वाले चित्र के दोनों बच्चों पर उँगली रखकर बोली, ''यही वह दोनों बच्चे हैं।''

''क्या.....'' चित्रा की आँखें विस्मय से फैली रह गयीं?

''क्या सोच रही चित्रा?''

कुछ नहीं..... मैं..... सोच रही थी कि.....। पर शब्द शायद उसके विचारों में खो गये।.....

प्रश्न :

१. अरुणा व चित्रा दोनों के स्वभाव के बारे में अपने विचार बताइए।

२. चित्रा ने विदेश जाकर क्या किया? आप के विचार में उसका विदेश जाना सही था? क्यों?

३. अरुणा की ममता पर अपने विचार बताइए।

SCERT TELANGANA